# GEOGRAPHICAL TOUR REPORT

## S.S.M.S Degree College Tarhasi

## (N.P.U. Medininagar)

### B.A. SEM-IV (2019-22)

**Guided by :-**

Sri Anup kumar (HOP)
Sri Anup kumar (Lecturer)
Department of Geography

**Presented by :-**

| | | |
|---|---|---|
| Name | : | Anupriya kumari |
| Roll No. | : | 200080500169 |
| Reg. No. | : | NPU/04443/19 |
| Session | : | 2019-2022 |

# ***CONTENT***

1.Preface

2.Acknowledgnent

3.Important of excursion

4. A journey of Sewati Dam and Dak Banglow

5. Introduction of Sewati Dam and Dak Banglow

   a. Location

   b. climate

   c. vegetation

   d. humann settlement & occupation

   e. population & culture

   f.communication & transportation

6 history of sewti Dam and Dak Banglow

7.My opinion & view

# TO WHOM IT MAY CONCERN

This is to certify that Anupriya Kumari is a student of part 3rd in Geography of S.S.M.S Degree college Tarhasi (Palamu) under Nilamber Pitamber University ,has successfully participated in geographical tour course on dated .....

During this period his/her conduct was good. I wish him every success in his/her life.

Lecture

Dept. of Geography

Head

Dept. of Geography

## ACKNOWLEDGMET

मैं अपना आभार उन सबों को प्रकट करता हूं जिन्होंने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हमारी भौगोलिक शैक्षणिक शाखा सेवती बांध एवं डाक बंगला के अध्ययन एवं अवलोकन कराने में हमारी सहायता की/

सर्वप्रथम हम अपने महाविद्यालय के प्रोफेसर लक्ष्मी कुमार एवं प्रोफेसर अनूप कुमार को देना चाहता/चाहती हूं जिन्होंने सारे विघ्न बाधाओं को नजरअंदाज करते हुए हमारे आवश्यकता के अनुसार कार्य का संपादन किया/

इसमें भंडारपाल अनिल पासवान का योगदान भी काफी सराहनीय रहा हम सब स्नातक तृतीय वर्ष के सहपाठीगन एक दूसरे को भरपूर सहायता किए साथ ही साथ समस्त सहपाठियों का प्रेम-पूर्वक सहयोगात्मक रवैया मुझे लगातार प्रेरणा प्रदान करता रहेगा /

अतः मैं उन सभी सहपाठियों एवं शिक्षक गण का हार्दिक आभारी हूं जो हमारे इन भौगोलिक सर्वेक्षण को पूर्ण कराने में काफी सहयोग किया।

धन्यवाद

वर्ग - स्नातक तृतीय वर्ष

विषय – भूगोल

## PREFACE ( प्रस्तावना )

हमारी पृथ्वी जिस पर हम निवास करते हैं, विविधताओं से परिपूर्ण है/ जिनमें भौगोलिक विविधता, ऐतिहासिक विविधता, सांस्कृतिक विविधता, आर्थिक विविधता अति महत्वपूर्ण है परंतु यह सर्वमान्य तय है कि भौगोलिक विविधता की सारी विविधताओं को जन्म देती है,भौगोलिक विविधताओं का अध्ययन भूगोल विषय में किया जाता है इस तरह भारत के सभी विद्यालयों में भूगोल विषय में स्नातक पाठ्यक्रम एक विशेष क्षेत्र का भौगोलिक सर्वेक्षण करते हैं, जिसमें मुख्य त भौगोलिक विविधताओं का मानव जीवन के संबंध एवं प्रभावो का सर्वेक्षण होता है/प्रतिवेदन प्रस्तुत करना अनिवार्य है जिसका पूर्णांक 50 का है। इसी उपलक्ष में सुखदेव सहाय मधेश्वर सहाय डिग्री महाविद्यालय तरहसी , पलामू के स्नातक तृतीय वर्ष के भूगोल विभाग ने सेवती बांध एवं डाक बंगला का भौगोलिक सर्वेक्षण करने का निर्णय लिया गया। जिसमें हमें सेवती बांध एवं डाक बंगला के आसपास के क्षेत्रों के भौगोलिक विविधताओं का अध्ययन व सर्वेक्षण करने का अवसर प्राप्त हुआ। वहां के वनस्पतियों की विविधताओं ,जैविक विविधता, मानव जीवन की ऐतिहासिक विशेषताएं, जनसंख्या आदि का सभी मुख्य भौगोलिक विशेषताओं के बारे में व्याख्यात्मक वर्णन करने का प्रयास किया गया। यह प्रतिवेदन मेरे श्रमशक्ति का परिचायक व भूगोल के अनुयाई छात्रों का ज्ञानवर्धन करने में उपयोगी है।

डेकबंगला में परिभ्रमण करते हुए

# सेवतीबांध एवं डाकबंगला का परिचय

1. स्थिति- सेवती बांध एवं डाक बंगला पलामू जिले का एक ऐतिहासिक जगह है। या मगध साम्राज्य को मुंबई बादशाह से जोड़ने वाली एकमात्र रास्ता जो मोदीनगर से 38 किलोमीटर उत्तर पूर्व तरहसी प्रखंड के स्थित है। इस बांध का क्षेत्रफल लगभग 10 वर्ग किलोमीटर एवं ऊंचाई 7 मीटर है। यह बांध लब्जी नदी का उद्गम स्थल है। इस बांध से सेवती ,काजी पकरी, तरहसी ,ललगडा, सिकनी ,धूमा ,भण्डरा ,इत्यादि गांव में सिंचाई की जाती है।

2. भू आकृति- सेवती बांध एवं डाकबंगला झारखंड प्रदेश के पठारी क्षेत्र में है, जो समुद्र तल से लगभग 2200 फिट की औसत ऊंचाई पर स्थित है। पठारी क्षेत्र का मतलब ऊंच -नीच जमीन जो कंकड़ीली- पथरीली हो। यहां पर लाल मिट्टी पाई जाती है यहां दक्षिण की ओर ढाल है। लब्जी नदी का मुहाना अमानत नदी में है

3 . जलवायु-- यहां का औसत तापमान 23 डिग्री सेल्सियस रहता है। ग्रीष्म ऋतु में तापमान 45 डिग्री सेल्सियस एवं शीत ऋतु में 13 डिग्री सेल्सियस तक रहता है। औसत वार्षिक वर्षा 200 सेमी होता है।

4. वनस्पति-- यहां की वनस्पति उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती है। यहां साल. महुआ, बॉस, बैर ,कनवाद, डठोर ,पुटूस इत्यादि प्रचुर मात्रा में देखने को मिलता है।

5. मानव अधिवास एवं व्यवसाय --- यहां पर मुख्य रूप से पिछड़े वर्ग के लोग एवं अनुसूची जाति के लोगो का बसाओ क्षेत्र है। यहां के लोगों के मुख्य व्यवसाय कृषि एवं मजदूरी हैं। लाह, केंदू, पत्ता एवं महुआ उत्पादन प्रचुर मात्रा में किया जाता है|

6. जनसंख्या- एवं संस्कृति क्या पठारी क्षेत्र होने के कारण यहां विरल जनसंख्या निवास करती है। यहां मिश्रित संस्कृति पाई जाती है। दशहरा, दिवाली, ईद ,मोहर्रम, होली ,एवं रामनवमी का त्यौहार धूमधाम से मनाया जाता है।

डैम में परिभ्रमण

7. संचार एवं आवागमन -यहां पहुंचने के लिए रेलमार्ग से डाल्टनगंज पहुंचकर वहां से बस एवं टेंपो के द्वारा पहुंचा जाता है। यहां पठारी क्षेत्र होने के कारण संचार के साधन जगह -जगह पर उपलब्ध नहीं हो पाता है।

तरहसी -पदमा मुख्य सड़क से लगभग 500 मीटर दाहिनी ओर सेवती गांव के उत्तर दिशा में श्रीमती बांध स्थित है। इसका निर्माण स्वतंत्रता के समय से पहले हुआ था। अंत के आसपास, बंदर,लंगूर ,सियार ,लकड़बग्घा भेड़िया इत्यादि जंगली जंतु रहते हैं।

यह बांध दर्शनीय है। प्रतिदिन लोग भ्रमण करने इस बांध तरफ आते हैं । सरकार के द्वारा किसी प्रकार की व्यवस्था नहीं कराई गई है।

तरहसी -पदमा मुख्य सड़क पर डाक बंगला स्थित है जहां पर डाक बंगला जिन शीर्ण अवस्था में है। यहां गर्मी के समय में भी वातावरण ठंडा रहता है। इसका परिसर लगभग 2 एकड़ का है। परिसर के अंदर एक पक्का कुआं भी है। यहां पर बंदर एवं लंगूर हमेशा देखने को मिलते हैं।

एकबेंगामा का परिभ्रमण

# भौगोलिक वर्णन

ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत मार्च से ही होनी लगती है। झारखंड का सबसे नीचा क्षेत्र में आता है। इस कारणवश वर्षा बहुत ही कम हो पाती है। आए दिन इस क्षेत्र को अकाल का सामना करना पड़ता है। मई-जून में तापमान 48 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है मौसम काफी उमस भरा रहता है। वर्षा के समय भी उमस की स्थिति बनी रहती है क्योंकि यह क्षेत्र झारखंड के पाठ परदेस में नहीं आता है। यह मैदानी क्षेत्र पर स्थित है|

यह क्षेत्र काफी कम वर्षा प्राप्त करता है यानी झारखंड का आकार क्षेत्र जैसा क्षेत्र है। इस कारण इस संपूर्ण क्षेत्र में कटीली झाड़ियां तथा कुछ बबूल के पेड़ नजर आते हैं। प्रखंड से कुछ दूर पलाश का बागान इस क्षेत्र में लगाया गया है जो कि कम वर्षा में भी टिका रहने वाला पेड़ है। इस प्रकार इस क्षेत्र में कहा जा सकता है की वनस्पति का अभाव पाया गया है। लोगों ने वनस्पति को उजाड़ कर कृषि योग्य भूमि बना लिया है|

झारखंड की मिट्टी तरह ही यह क्षेत्र लाल एवं भुरी मिट्टी से पटा है लेकिन ऊपरी भारत में गौराम या जल के प्रभाव के कारण रंग में अंतर नजर आता है। जलवायु के अध्ययन के लिए इस क्षेत्र का विशेष महत्व नहीं है ,क्योंकि यह छोटा क्षेत्र झारखंड के ही जलवायु का अनुकरण करता है। जलवायु के अनुसार ही उष्णकटिबंधीय मानसूनी कृषि किया जाता है। जिसमें धान, मक्का, तिल ,अरहर आदि का कृषि होता है। यह फसल सिर्फ जीवन निर्वाह के रूप में किया जाता है। इसका व्यापारिक तौर पर उपज नहीं होता है। मक्का क्षेत्र में किया जाना चाहिए क्योंकि क्षेत्र में वर्षा कम होती है। ऐसे में मक्का, तिल और अरहर आदि कम वर्षा में भी किए जा सकते हैं। इस स्थान पर सिंचाई का साधन है वहां मूंग की खेती बड़े स्तर पर की जाती है।

# अपना विचार

शैक्षणिक भौगोलिक भ्रमण के दौरान हमें पलामू जिले के सेवती बांध एवं लगभग 2 एकड़ में फैला हुआ डाकबंगला को काफी नजदीक से देखने का मौका मिला। अभी वह बिल्कुल खंडहर बन चुका है। जहां पर अंग्रेज अधिकारी विश्राम किया करते थे। हमें यहां पर ग्रीष्म ऋतु में भी शीतलता का एहसास हुआ। अब यहां अंग्रेज के जगह पर बंदर एवं लंगूर रहते हैं। बैठने के लिए जिस जगह जगह पर चबूतरा बनाया हुआ था ।डाक बंगला के अंदर अलमारी देखने को मिला जो बिल्कुल टूट फूट गया था।

हमलोग सभी सहपाटीगन डाक बंगला के बाहर चबूतरे पर बैठकर जलपान किए।

सेवतीबांध में अनेक प्रकार के पक्षी जलविहार कर रहे थे। कुछ बच्चे मछलियों को बंसी में पकड़ रहे थे। वे बताएं कि इस बांध में काफी बड़ी-बड़ी मछलियां पाई जाती है। इस बार में अनेक प्रकार के जंगली और पालतू जानवर प्यास बुझाने आते हैं।

हमें या बांध एवं डाक बंगला बहुत अच्छा लगा परंतु प्रशासनिक उदासीनता के कारण यह पर्यटन स्थल का रूप नहीं ले सका है। यदि सरकार इस जगह को पर्यटन स्थल के रूप में विकसित करना चाहे तो बहुत ही लाभदायक होगा। यहां के बहुत से परिवारों के लिए रोजगार के अवसर मिल सकता है।